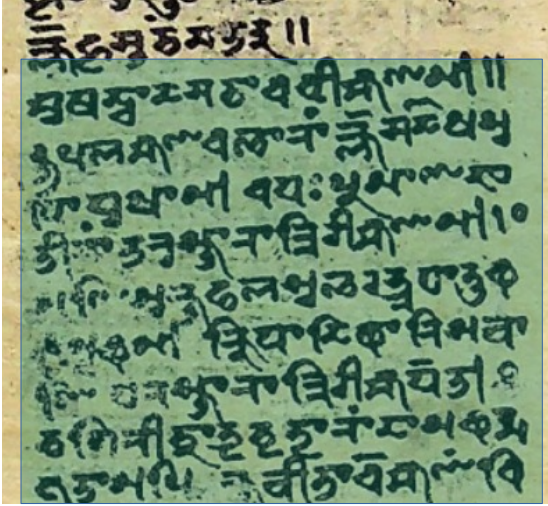


**Manu 5**

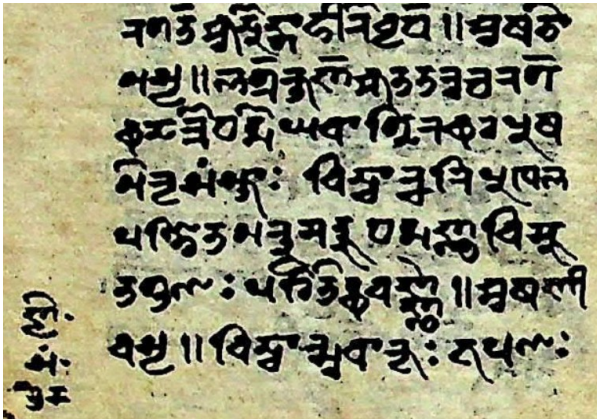
**Title : Jyotisha Manuscript (includes Bhaga Phala-Grah Gochar-Sutikadhyaya) -(Satisar Books)**  
(Missing pages)



अथ लग्नादिभावविचारः ।

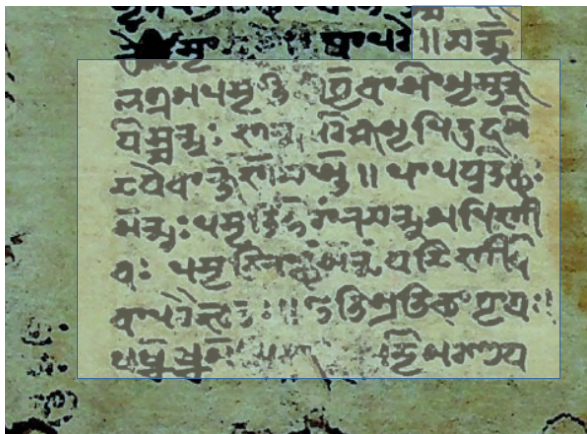
रूपलक्षणवर्णानां केशदुःखसुरवायुपाम् । वय प्रमाणं जात्रानां तनुस्थाने  
नियोजयेत् ॥ १ ॥ मणिमुक्ताफलस्वर्णरत्नधातुकदम्बकम् । क्रयाणकानि  
सर्वाणि धनस्थाने नियोजयेत् ॥ २ ॥ भगिनीभ्रातृभृत्यानां दासकर्मकृता-  
मपि । कुर्वीत वीक्षणं विद्वान्सन्ध्यादुधिव्यवेष्टमनि ॥ ३ ॥ वाटिकाग्रामगेहादि-  
वृद्धिस्थानं गमागमौ । प्रवेशं मातरं क्षेत्रं विधिमन्त्रापेधं सुखे ॥ ४ ॥ गर्भाप-  
त्यविनेयानां मन्त्रसंधानयोरपि । विद्यावृद्धिमथानानां सुतस्थानाद्विनिर्णयः  
॥ ५ ॥ महिष्याद्यरियुग्युद्धगवाक्षकूरकर्मणाम् । मातुलौचकलङ्कानां रिपुस्था-  
नाद्विनिर्णयः ॥ ६ ॥ वाणिज्यं व्यवहारं च विवादं चौरकर्म च । गमागमं  
कलत्राद्यं पश्येत्प्रातः कलत्रतः ॥ ७ ॥ नद्युत्तारेऽथैवपम्ये दुर्गे शत्रवसंकटे ।  
नष्टे दृष्टे रणे व्याधौ छिद्रे छिद्रं निरीक्षयेत् ॥ ८ ॥ वापीकूपतडागादिमपादेव-  
गृहाणि च । दीक्षायात्रां मठं धर्मं गुरुं धर्मं निरीक्षयेत् ॥ ९ ॥ राज्यं मुद्रां पदं

Ref <https://archive.org/details/Jyotirnibandh/page/n323/mode/2up?view=theater>



३४८ बृहज्जातके भावाध्यायः  
अथ लग्नादिस्थयोर्भौमबुधयोजितस्य स्वरूपं  
वसन्ततिलकेनाऽऽह—  
लग्ने कुजे क्षततनुर्धनगे कदन्नो  
धर्मेऽघवान् दिनकरप्रतिमोऽन्यसंस्थः ।  
विद्वान् धनी प्रखलपण्डितमन्यशत्रु-  
धर्मज्ञविश्रुतगुणः परतोऽकवज्जे ॥ ६ ॥

Ref [https://archive.org/details/brihatjatakaofvarahamihiravivruttiobhattachalpalasitaramjha\\_202003\\_434\\_V/page/n349/mode/2up](https://archive.org/details/brihatjatakaofvarahamihiravivruttiobhattachalpalasitaramjha_202003_434_V/page/n349/mode/2up)



चन्द्रे लग्नमपश्यति मध्ये वा शुक्रसौम्ययोश्चन्द्रे ।

जन्म परोक्षस्य पितुर्यमोदये वा कुजे वाऽस्ते ॥ ४ ॥

पापयुतोऽर्कः सेन्दुः पश्यति होरां न चन्द्रमपि जीवः ।

पश्यति सार्कं नेन्दुं यदि जीवो वा परैर्जातः ॥ ५ ॥

Ref [https://sanskritdocuments.org/doc\\_z\\_misc\\_sociology\\_astrology/laghujAtaka.html](https://sanskritdocuments.org/doc_z_misc_sociology_astrology/laghujAtaka.html)



२  
 सुत्रमुद्रितवैश्वि ३ वदि  
 कगममेतुलिभदेधपनिगीति  
 ८ विवंगविहृभास्मीनृष्टुहृता  
 लतेवपः ५ गहुपहुविनीतांनम  
 कुमवृनयेमपि विहृवृष्टिप्रवृ  
 नंभुतभूनामिनिमुयः ५ रि  
 पुमभूमपहुष्टवकेमकुवकम  
 लभा सुतलतकुमहुनंविपु  
 भूनामिनिमुयः ५ कलिहृंगम  
 विवंगमष्टवदरपरभ्यरभा ५  
 भागमकलहुलिपष्टुहृताः ५  
 लहुतः १ सुगुहृवस्मीतीरकुनेम  
 सुवमहुटे नष्टुहृष्टुवल्हृष्टुकि  
 सुकिहृविगीमयेता ५ वपीकुप  
 उरुहृष्टिपुपष्टुवल्हृदनिमस्मी  
 मायहृमंष्टुष्टुष्टुमभूनामि  
 गीमायेता १ गहृमभृपंगष्टु

ह्री.  
 म.  
 १०५

[illegible]

C-0. Satisar Foundation (<https://satisar.org/>)  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

धर्ममुदमनिगदवः विप्रनम

ॐ नमः शिवाय

८: ॥ अथ भुवः प्रदत्तं भवति ॥

८५: सुमुठः १० सु३ लीवु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥

पुण्यलीलासुखसुखिष्टः ॥ ३५ ॥

नृणामनयः दुःपयः ॥ नव

मौ प्रदठे भम निगदः पि

कृत्वा मण्डपः मन्त्रपुत्रेण

पञ्चकः मुक्तः ॥ ८५ ॥

१० मुक्तः मुक्तः अद्वैतम्

निगदः समुद्रः ॥ त्रिकु

ममत्वे मुक्तः ॥ हृदयमवमुक्तः

ਬੁਧਸੁਕ੍ਰਿਸੁਠੇ ॥ ਸੁਧਠ ੫੬

ल० ॥ ॐ नमो भगवते विष्णुने

(15)



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
 तिष्ठतः लघुप्रभुभगमिभुनि  
 वरतिष्ठतिष्ठतः ॥

|   |     |     |     |     |     |     |     |     |     |      |
|---|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|------|
| स | प्र | प्र | ति  | द   | म   | सु  | सु  | र   | देव | रतिः |
| ठ | र   | सु  | प्र | प्र | प्र | प्र | प्र | प्र | म   | प्र  |
| र | म   | सु  | ति  | दे  | वि  | प्र | र   | म   | म   | म    |

प्रभुभगम

|    |   |     |     |     |     |     |
|----|---|-----|-----|-----|-----|-----|
| क  | न | सु  | प्र | म   | द   | नः  |
| र  | म | प्र | म   | द   | प्र | प्र |
| ति | र | सु  | प्र | प्र | प्र | प्र |

|    |   |     |   |     |   |     |
|----|---|-----|---|-----|---|-----|
| ह  | म | म   | म | म   | म | म   |
| वि | ह | सु  | र | र   | म | प्र |
| ति | म | प्र | र | प्र | म | म   |

|    |   |   |   |   |   |
|----|---|---|---|---|---|
| वि | क | म | म | म | म |
| म  | म | म | म | म | म |
| म  | म | म | म | म | म |
| म  | म | म | म | म | म |

वत्सवत्सव

वत्सवत्सव

ॐ नमः शिवाय

CC-0. Sarayu Foundation (https://sarayu.org/)

|    |   |    |   |    |   |   |   |    |
|----|---|----|---|----|---|---|---|----|
| शु | भ | रु | न | ली | म | ७ | क | सु |
| ८  | ३ | ५  | ७ | ३  | ७ | ५ | ७ | ७  |
| ७  | ८ | ७  | ७ | ७  | ७ | ७ | ७ | ७  |
| ७  | ७ | ७  | ७ | ७  | ७ | ७ | ७ | ७  |

सुखयोगिनीसमायुक्ता

|    |     |    |    |   |   |    |    |
|----|-----|----|----|---|---|----|----|
| मं | पिं | रं | रु | र | ७ | मि | मं |
| म  | ७   | ७  | ७  | ७ | ७ | ७  | ७  |
| ७  | ७   | ७  | ७  | ७ | ७ | ७  | ७  |
| ७  | ७   | ७  | ७  | ७ | ७ | ७  | ७  |

सुखठपसमयसमायुक्ता

|   |   |   |   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |

७.  
७.  
७.  
७.  
७.  
७.  
७.  
७.

सुखयोगिनीसमायुक्ता

[illegible]



[illegible]

१२  
 श्रुं प्रयुं लुः प्रयुति ॥ १० ॥  
 भिन्नु वल्लोक्तु भिन्नवत्तु  
 लु नृपुमभरुमेन उरुय न  
 लवधितः ॥ सुगं वभुनिके नृप  
 नृपुमभरुमेन उरुय न  
 सीकुदुययदुतिगिचुतः भुद  
 निद्रमः ॥ लपमदुतुगते नृदः  
 भृपभुतिकः वदितुमुय  
 नृपुमभरुमेन उरुय न  
 लपमभरुमेन उरुय न  
 येमुयः रानु गिमेन पितुदमे  
 येवकुलामु ॥ पपयुतः  
 मेयुः पमुतिकः नृपुमभरुमेन  
 वः पमुतिकः नृपुमभरुमेन  
 वपुमेन ॥ ११ ॥ उतिगुतिकः पृयः  
 पपुमेन ॥ १२ ॥